स्वतंत्रता के सात मील
रॉबर्ट स्मॉल
की कहानी
जेनेट हाफमैन
चित्र: डुआन स्मिथ

दक्षिण कैरोलिना में एक गुलाम के रूप में पले-बढ़े रॉबर्ट स्मॉल ने हमेशा उस पल का सपना देखा वो जब वो आजाद होंगे. अब वो क्षण आ गया था.

रॉबर्ट "प्लांटर" जहाज़ पर गर्व से खड़े थे. जहाज़ और यूनियन शासित प्रदेश में स्वतंत्रता पाने के बीच अब केवल सात मील पानी बाकी था. सटीक और अद्भुत साहस के साथ, उन्होंने बंदरगाह में संघीय किलों को पार किया और जहाज सुरक्षा की ओर बढ़ाया. उनका एक गलत अनुमान भी घातक सिद्ध होता, लेकिन रॉबर्ट, अपने परिवार और अपने चालक दल के साथियों के लिए, जोखिम लेने को तैयार था.

"स्वतंत्रता के सात मील", एक गुलाम स्टीमबोट चालक रॉबर्ट स्मॉल के साहसी भागने का एक सम्मोहक कहानी है. वो बाद में गृह युद्ध के महानतम हीरो में से एक बने. विपत्ति का सामना करने में उनका दृढ़ साहस उन सभी को प्रेरणा देगा जो दुर्गम चुनौतियों का डटकर सामना करने से डरते नहीं हैं.

# स्वतंत्रता के सात मील

# रॉबर्ट स्मॉल की कहानी

जेनेट हाफमैन

चित्र: डुआन स्मिथ

रॉबर्ट स्मॉल के स्वतंत्रता के सपने उनके गृहनगर ब्यूफोर्ट, दक्षिण कैरोलिना में शुरू हुए, जो चार्ल्सटन से तट के नीचे प्लांटेशन द्वीपों के एक समूह पर सबसे बड़ा शहर था. उनका जन्म 1839 में मैककी परिवार की प्रॉपर्टी पर एक गुलाम घर में हुआ था.

रॉबर्ट की माँ एक घरेलू नौकर थीं, और जब वो लगभग छह साल का था, तब रॉबर्ट ने भी मैककी के घर में काम करना शुरू कर दिया था. वो मास्टर मैककी के घोड़े को ब्रश करता, उनका शिकारी धनुष उठाता, और उनके मछली पकड़ने के कांटे में चुग्गा डालता था. नेकदिल और बातूनी रॉबर्ट, अपने मालिक का पसंदीदा गुलाम बन गया था.

एक पसंदीदा गुलाम के रूप में, रॉबर्ट का जीवन अधिकांश दासों की तुलना में आसान था. फिर भी, उसने बचपन से गुलामी की बुराइयों को बहुत करीबी से देखा था. पड़ोसी बागानों में, उसने दासों को तब तक कोड़ों से पिटते देखा जब तक कि वे खून से लहू-लुहान नहीं हो गए. गुलामों को एकदम छोटी-छोटी चीजों के लिए सजा दी जाती थी - कुछ मिनटों से फार्म पर देरी से पहुंचना, खरपत एक टुकड़ा साफ़ करना भूल जाना, पर्याप्त तेजी से काम नहीं करना आदि. शहर में रॉबर्ट ने अपनी उम्र के लड़कों और लड़कियों को, नीलामी में, जानवरों की तरह बिकते हुए देखा था.

हालाँकि मैकक़ी उसके प्रति दयालु थे, रॉबर्ट को गुलामी से नफरत हो गई थी. वो अब जल्द से जल्द मुक्त होना चाहता था.

1851 में, जब रॉबर्ट बारह वर्ष का था, तब मैकी परिवार ने उसे चार्ल्सटन में रहने और काम करने के लिए भेजा. पूरे दिन-रात में वो मेजों पर इंतजार करता था और शानदार प्लांटर्स होटल के कमरों में खाना डिलीवरी करता था. रॉबर्ट एक महीने में पाँच डॉलर कमाता था लेकिन उसे वे पैसे अपने मालिक को देने पड़ते थे.

जब भी रॉबर्ट काम नहीं कर रहा होता था तो वो समुद्र तट पर घूमने चला जाता था. वहां उसने सभी आकृतियों और आकारों की नावों को देखा. वो इस बात से मोहित था कि वे नावें दुनिया में कहीं भी जा सकती थीं.

रॉबर्ट को जहाजों पर कामगारों से बात करना अच्छा लगता था. दबी आवाज में उसने उनसे "उत्तर" के बारे में कहानियाँ सुनीं, जहाँ पर सभी काले लोग पढ़ना और लिखना सीखने के लिए स्वतंत्र थे. वे कमाए हुए धन को रखने के लिए स्वतंत्र थे और अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र थे. वो सुनकर रॉबर्ट की आँखें आशा से चमक उठीं. किसी दिन वो भी स्वतंत्रता प्राप्त करेगा.

समुद्र तट पर अधिक समय बिताने के लिए उत्सुक, रॉबर्ट को मास्टर मैकक़ी से जहाजों से माल उतारने के काम की अनुमति मिली. रॉबर्ट ने कड़ी मेहनत की. वो स्मार्ट और भरोसेमंद था, और पंद्रह साल की उम्र में वो एक चालक दल का फोरमैन बन गया था, और अब वो अपनी उम्र से दोगुने पुरुषों को आदेश देता था.

अंत में रॉबर्ट नौकरी की दिनचर्या को नापसंद करने लगा, इसलिए उसने शिपयार्ड में काम करना शुरू कर दिया, जिसमें पाल बनाना शामिल था. रॉबर्ट को पानी में, नावों की पालों का परीक्षण करने में बड़ा मज़ा आया, और उसने छिपी हुई चट्टानों को ध्यान से देखते हुए संकीर्ण चैनलों को नेविगेट करना सीखा. उसके बॉस ने दावा किया कि रॉबर्ट के पास एक व्हीलमैन का कौशल था, जो कि दक्षिण में काले नाव पायलटों को दिया गया टाइटल था.
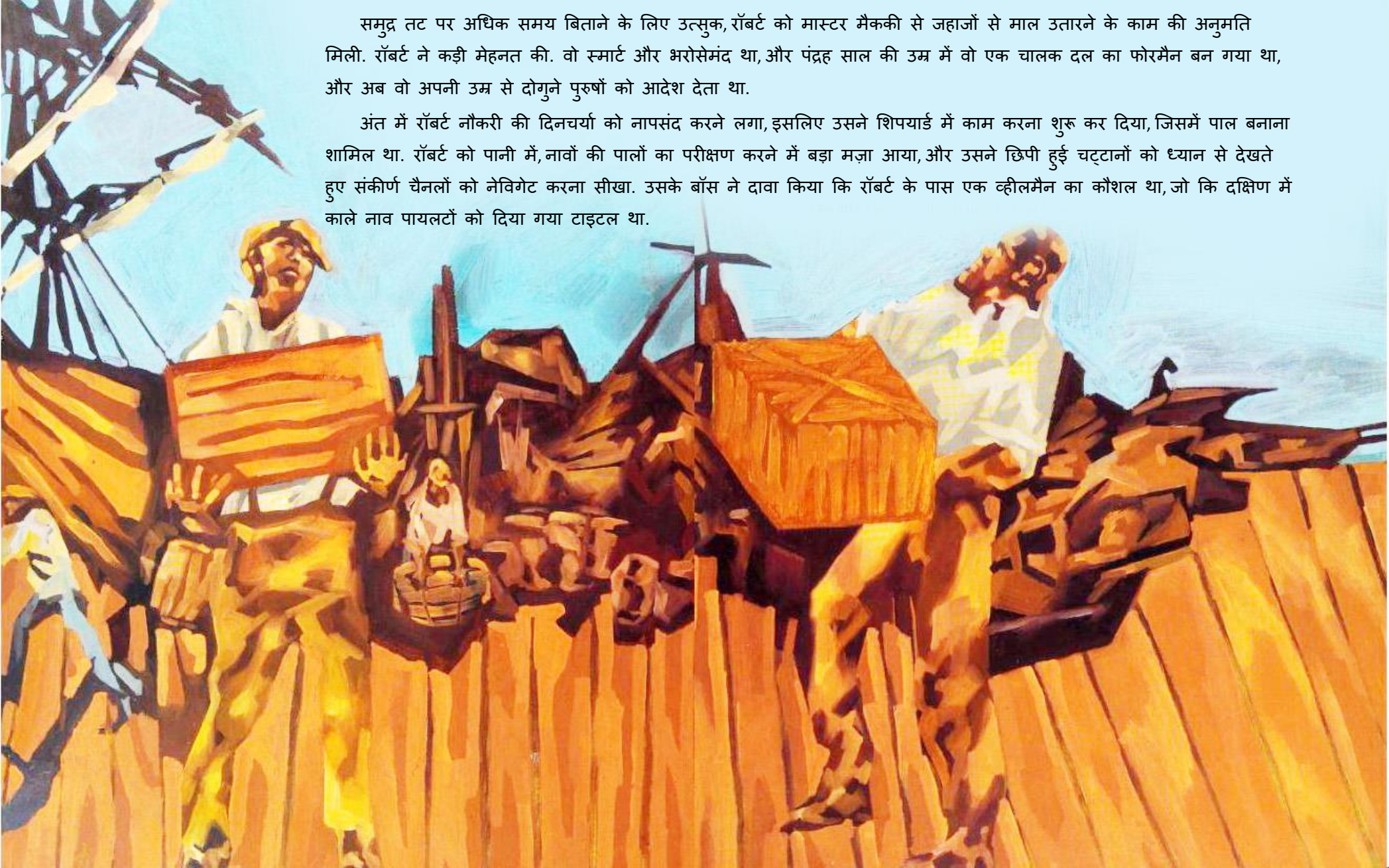
जब रॉबर्ट सत्रह वर्ष का था, तो उसकी मुलाकात चार्ल्सटन होटल की नौकरानी हन्ना जोन्स से हुई, जो सैमुअल किंगमैन की दासी थी. रॉबर्ट को हन्ना की चमकती आँखों और तेज बुद्धि से प्यार हो गया, और उसने उसके साथ अपना जीवन बिताना चाहा. शादी करने और साथ रहने के लिए, जोड़े ने अपने मालिक के साथ समझौते किए. रॉबर्ट और हन्ना अपनी नौकरी खुद ढूंढेंगे. हर महीने रॉबर्ट, मैकी को पंद्रह डॉलर देगा और हन्ना, किंगमैन को सात डॉलर देगी. दंपति द्वारा अर्जित बाकी धन उनका अपना होगा.

रॉबर्ट और हन्ना ने 14 दिसंबर, 1856 को शादी की और फरवरी 1858 में, उनकी पहली संतान, एलिजाबेथ का जन्म हुआ. जब रॉबर्ट ने अपनी छोटी बेटी को उठाया तो वो इस अहसास से दुखी था कि एलिजाबेथ उसकी नहीं, वो हन्ना के मालिक की संपत्ति थी. इसलिए, रॉबर्ट ने आठ सौ डॉलर में अपनी पत्नी और बेटी की आज़ादी खरीदने का सौदा किया. हालाँकि रॉबर्ट अभी भी गुलाम था. लेकिन अब हन्ना और एलिजाबेथ वहां जा सकते थे जहाँ रोबर्ट जाता था.

रॉबर्ट और हन्ना नहीं जानते थे कि वे इतना पैसा कैसे बचाएंगे; लेकिन वे उसकी कोशिश करने जा रहे थे.

शाम को, मोमबत्ती की रोशनी में, हन्ना चार्ल्सटन की धनी महिलाओं के लिए कपड़े सिलती थी जबकि रॉबर्ट ने बंदरगाह, नदियों, खाड़ियों और चैनलों के चार्ट और नक्शों का अध्ययन करता था. उसने हर खाड़ी, सैंडबार (रेत के टीलों) और पानी के करंट का स्थान नोट किया.

जल्द ही रॉबर्ट जलमार्गों को कुशलतापूर्वक नेविगेट कर रहा था, तट के साथ-साथ प्लांटेशन पर नावें ले जा रहा था. ग्रीष्मकाल के दौरान, उसने एक तटीय स्कूनर (नाव) पर नाविक का काम किया. उनके समर्पण और कौशल ने उसे चार्ल्सटन में सर्वश्रेष्ठ नाव संचालकों में से एक के रूप में ख्याति मिली.

तीन साल बाद रॉबर्ट और हन्ना ने सात सौ डॉलर बचा लिए थे. दंपत्ति अपने लक्ष्य के करीब थे, लेकिन उस समय देश में एक तूफान चल रहा था.

1861 के वसंत तक, चार्ल्सटन तूफान के मध्य में था. लंबे समय से उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में गुलामी को लेकर बहस चल रही थी. जैसे-जैसे देश का विस्तार पश्चिम की ओर हुआ, दक्षिणी लोग नए क्षेत्रों में भी गुलामी की अनुमति चाहते थे. लेकिन उत्तरी लोगों को वो ठीक नहीं लगा. 1860 में अब्राहम लिंकन, जिन्होंने गुलामी के प्रसार का विरोध किया था राष्ट्रपति चुने गए. फिर दक्षिण कैरोलिना, संयुक्त राज्य अमेरिका से अलग हो गया. कई अन्य दक्षिणी राज्यों ने भी वही किया. अलग हुए इन राज्यों ने मिलकर अमेरिका के कॉन्फेडरेट स्टेट्स का गठन किया. उत्तरी राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका "संघ" बना रहा.

कॉन्फेडेरसी ने जल्दी ही दक्षिण में कई सैन्य किलों पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन संघ ने चार्ल्सटन हार्बर में फोर्ट सुमटर पर नियंत्रण रखा. अप्रैल 1861 को, फोर्ट सुमटर के लिए एक लड़ाई हुई और अंत में कॉन्फेडेरसी ने उसपर कब्ज़ा कर लिया. फिर उत्तर और दक्षिण के बीच गृहयुद्ध शुरू हो गया.

रॉबर्ट और हन्ना जैसे गुलामों के लिए युद्ध अनिश्चितता लेकर आया, लेकिन साथ में आशा भी. अगर उत्तर जीत गया, तो फिर गुलामी खत्म हो जाएगी.

चार्ल्सटन हार्बर के अंदर और बाहर वाणिज्यिक नाव यातायात धीमा हो गया. जल्द ही शिपयार्ड में रॉबर्ट के लिए कोई काम नहीं बचा. जुलाई में उसने "प्लांटर", 14.7 फुट, लकड़ी से चलने वाले स्टीमर पर एक डेकहैंड के रूप में नौकरी की. कभी वो नाव कपास को ट्रांसपोर्ट करती थी लेकिन अब वो सैनिकों, उपकरणों और सप्लाई ले जाने के लिए एक सशस्त्र संघीय जहाज में परिवर्तित हो गई थी.

रॉबर्ट ने "प्लांटर" पर काम करके गर्मियों में बंदरगाह और तट पर संघीय सुरक्षा को पुख्ता किया. उसने "माइंस" बिछाईं, लाइटहाउस नष्ट किए और नए किले बनाए. अपने दिल में रॉबर्ट चाहता था कि संघ युद्ध जीत जाए.

रॉबर्ट के नेविगेशनल कौशल और जलमार्ग के ज्ञान ने "प्लांटर के अधिकारियों को प्रभावित किया. फिर विश्वास और सम्मान के साथ रोबर्ट को व्हीलमैन के रूप में पदोन्नत किया गया. क्योंकि अब रॉबर्ट नाव चलाने के लिए जिम्मेदार था, इसलिए उसने बंदरगाह के कई किलों को पार करने के लिए गुप्त भाप सीटी संकेतों को भी सीखा.

1861 के अंत में अचानक रॉबर्ट और हन्ना के लिए स्वतंत्रता करीब आ गई. यूनियन (संघीय) नेवी ने चार्ल्सटन से तट के ठीक नीचे पोर्ट रॉयल पर कब्जा कर लिया. एक केंद्रीय बेड़े ने चार्ल्सटन हार्बर के प्रवेश द्वार पर नाकाबंदी की. कप्तान की दूरबीन माध्यम से, अब रॉबर्ट उत्तरी जहाजों को देख सकता था. संघ का क्षेत्र और स्वतंत्रता पहुँच के भीतर थी - केवल सात मील दूर.

उसने रॉबर्ट को आशा और दृढ़ संकल्प दिया, क्योंकि तभी उसके बेटे, रॉबर्ट जूनियर का जन्म हुआ. अब पहले से कहीं ज्यादा, रॉबर्ट जानता था कि उसे अपने और अपने बढ़ते परिवार के लिए आजादी का रास्ता खोजना होगा.

आखिरकार जब मौका आया तो उसकी शुरुआत एक मजाक से हुई. एक शाम नाव के गोरे अधिकारी रात बिताने के लिए तट पर चले गए, हालाँकि यह सैन्य नियमों के विरुद्ध था. मजाक में, चालक दल में से एक ने रॉबर्ट के सिर पर कप्तान की पुआल टोपी रख दी. फिर रॉबर्ट ने अपनी दोनों बाहों को बाँधा और अपने छोटे कद में वो कप्तान की तरह चलने लगा. सब लोग हँसे. रॉबर्ट के कम ऊंचाई के कारण कप्तान के साथ उसकी समानता अद्भुत थी.

अचानक रॉबर्ट गंभीर हो गया और उसने आदमियों से कहा कि वे उस मज़ाक अपने तक ही रखें. उसके दिमाग में एक विचार था.

रॉबर्ट ने हन्ना के साथ अपनी योजना साझा की. एक रात जब अधिकारी किनारे पर होंगे, तब रॉबर्ट और चालक दल "प्लांटर" चुराने की सोच रहे थे. उनके परिवार पास के एक घाट पर छिप जायेंगे और रास्ते में "प्लांटर" उन्हें उठा लेगा. कप्तान की टोपी पहनकर और गुप्त भाप सीटी के संकेतों का जवाब देकर, रॉबर्ट किले के गार्ड को जहाज को जाने देने के लिए बरगला सकता था. वो "प्लांटर" को संघ के बेड़े के पास और स्वतंत्रता के लिए रवाना होगा.

हन्ना ने पूछा कि यदि वे पकड़े गए तो क्या होगा. रॉबर्ट ने कहा कि उन्हें शायद गोली मार दी जाए. हन्ना एक पल के लिए चुप रही, और फिर साथ जाने को तैयार हो गई. वो भी आजादी के एकमात्र मौके के लिए अपनी जान और अपने बच्चों की जान जोखिम में डालने को तैयार थी.

रॉबर्ट ने अपने साथियों को योजना के बारे में बताया और उनसे उसे गुप्त रखने का वादा किया. उसने उनसे यह भी कहा कि अगर कुछ गलत हुआ, तो वे खुद बंदी बनने की बजाय जहाज को डुबा देंगे. यदि जहाज़ काफी तेजी से नीचे नहीं डूबा, तो वे सभी अपने हाथ पकड़कर पानी में कूद जायेंगे. उसके साथी उससे सहमत हुए. उन्होंने रॉबर्ट पर भरोसा किया क्योंकि वे भी आज़ादी के लिए तरस रहे थे.

पलायन का समय रॉबर्ट पर छोड़ दिया गया था. अब उसे सही पल चुनना था.

हर दिन रॉबर्ट देखता और सुनता रहा. 1861 के बसंत में एक अवसर आया. "प्लांटर" के चालक दल को चार्ल्सटन के दक्षिण-पश्चिम में एक नदी की रखवाली करने वाली चार तोपों को बंदरगाह में बनाए जा रहे किले में लेकर जाना था. कप्तान चाहता था कि सोमवार, अंधेरा होने से पहले वो काम पूरा हो. अधिकारियों ने उस रात तट पर जाने और सुबह तक वहीं रुकने की योजना बनाई.

रॉबर्ट को एहसास हुआ कि यह वो मौका था जिसका वो इंतजार कर रहा था.
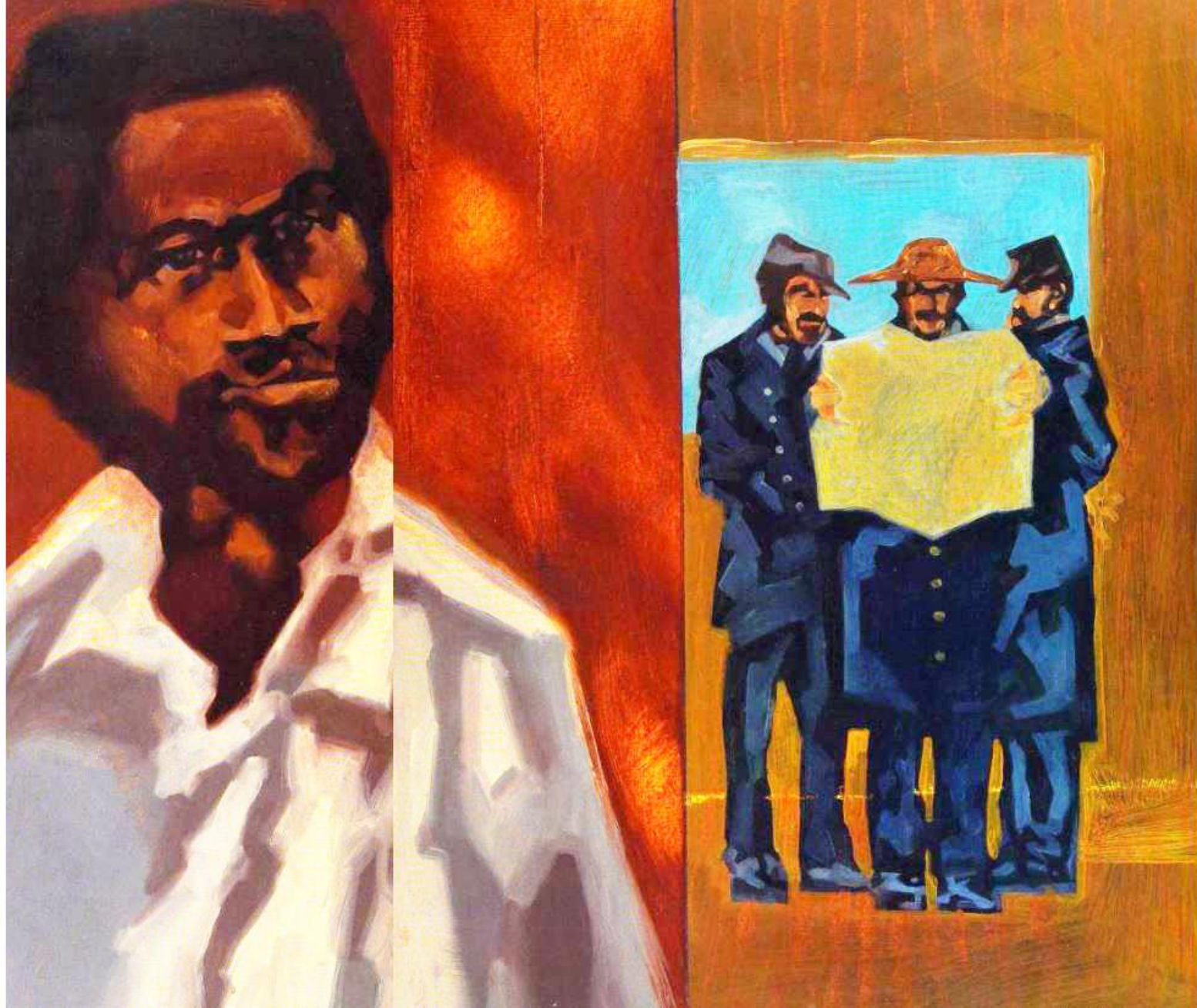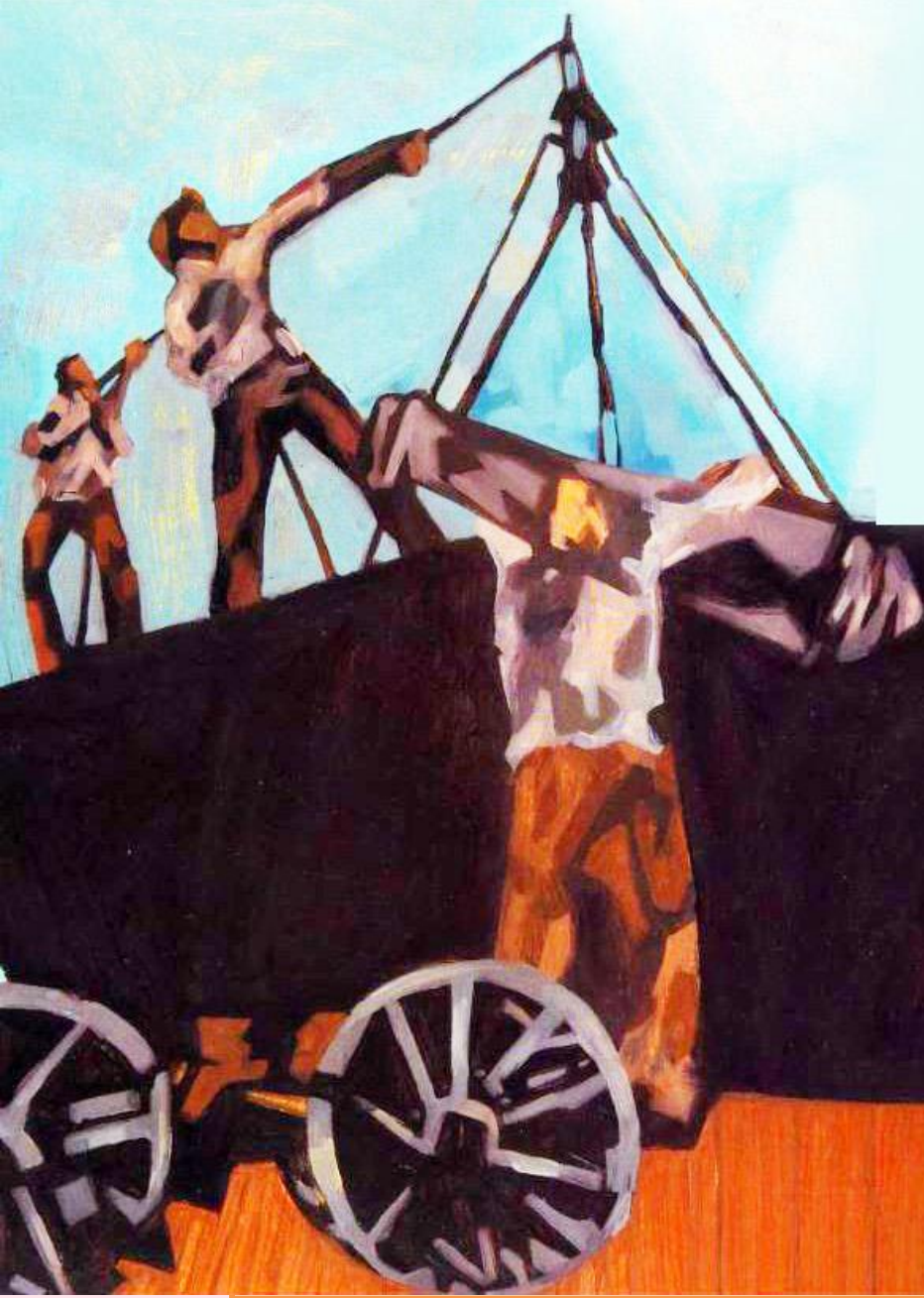
12 मई को "प्लांटर" ने तोपों को लोड करने के लिए नदी की यात्रा की. रॉबर्ट और उनके साथियों को पता था कि संघ के लिए ये हथियार कितने मूल्यवान थे. उन्होंने तोपों की डिलीवरी में देरी करने और उनके साथ भागने की योजना बनाई.

उस दिन खलासियों ने जानबूझकर धीरे-धीरे काम किया. उन्होंने गांठें गिनीं और रस्सियां गिराईं. जब तक सभी चार तोपें लादी गईं, तब तक दोपहर हो चुकी थी. रॉबर्ट की योजना काम कर रही थी. किले में डिलीवरी के लिए उन्हें सुबह तक इंतजार करना होगा.

रॉबर्ट का दिमाग दौड़ने लगा जब वो "प्लांटर" को वापस बंदरगाह में अपनी गोदी में लाया. बचने का समय नजदीक आ रहा था. आशा से उसका दिल धड़क रहा था. वो सावधान था कि उसकी उत्तेजना प्रदर्शित न हो. अंत में, अधिकारियों ने रॉबर्ट पर भरोसा करते हुए कहा कि वो नाव को सुबह जल्दी ले जाने के लिए तैयार रहे.

रॉबर्ट ने तुरंत चालक दल को इकट्ठा किया और एक बार फिर योजना पर काम किया. फिर दल के लोग हरकत में आए, स्टीम बॉयलरों को चलाने के लिए डेक पर जलाऊ लकड़ी के ढेर लोड किया और हर उपकरण की दोबारा जांच की. रॉबर्ट ने एक सफेद झालरदार शर्ट, एक ड्रेस जैकेट और कप्तान की चौड़ी-चौड़ी स्ट्रॉ हैट पहनी.

भोर के तीन बज चुके थे जब तक बॉयलरों में भाप ने फुंफकारा. कॉन्फेडरेट और साउथ कैरोलिना के झंडे को मस्तूल के ऊपर तक उठाया गया. पायलट हाउस में रॉबर्ट ने पहिया पकड़ लिया और वो "प्लांटर" को अपनी गोदी से दूर ले गया. जहाज कुछ ही दूरी पर नदी के ऊपर चलकर रुक गया. चालक दल के परिवारों को एक नाव से लाने के लिए "प्लांटर" से एक नाव चुराई गई थी, जिसमें परिवार के लोग रात होने के बाद से छिपे हुए थे.

रॉबर्ट गहरे पानी में बेचैनी से झाँक रहा था, और नाव के कीमती भार के साथ लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था. कुछ लंबे मिनटों के बाद उसे नाव दिखाई दी. एकदम शांत माहौल में परिवार "प्लांटर" में सवार हो गए और उन्हें डेक के नीचे ले जाया गया.

हरेक के सुरक्षित सवार होने के बाद, रॉबर्ट बंदरगाह से आगे निकला. उसने डॉकसाइड छोड़ने के लिए सीटी बजाई, और उसे उसका उत्तर मिला. दौड़ने की प्रबल इच्छा से लड़ते हुए, रॉबर्ट ने जहाज को सावधानी से खुले पानी में उतारा. उसे शांत रहना था. उसका परिवार और जहाज के अन्य सभी लोग उसपर निर्भर थे. रॉबर्ट का धैर्य काम किया. तट रक्षक ने "प्लांटर" को जाते हुए देखा लेकिन उसे रोका नहीं.

"प्लांटर" के चप्पू वाले पहिए गहरे पानी को एक स्थिर मंथन के साथ काट रहे थे. कैसल पिंकनी और फोर्ट रिप्ले को आसानी से पार कर लिया गया. फोर्ट जॉनसन आगे दिखाई दे रहा था. उसकी दीवारें तोपों से भरी हुई थीं. रॉबर्ट की हथेलियाँ पसीने से तर हो गईं, रॉबर्ट भाप की सीटी की डोरी तक पहुंचा. उसने भाप गुप्त संकेत उड़ाया और प्रार्थना की. लुकआउट ने वापस संकेत दिया: फिर रॉबर्ट ने राहत की सांस ली.

जैसे ही जहाज फोर्ट सम्टर की विशाल दीवारों के पास पहुंचा, रॉबर्ट ने देखा कि सुबह हो रही थी. "प्लांटर" ने आने वाले ज्वार-भाटे के कारण कुछ समय गंवा दिया था. सुबह के उजाले में चौकीदार शायद पहचान सके कि रॉबर्ट कप्तान नहीं था. चालक दल के एक चिंतित साथी ने रॉबर्ट से स्वतंत्रता के लिए पानी में तेज़ी से चलने को कहा. लेकिन रॉबर्ट को पता था कि अगर "प्लांटर" किले के पास से गुजरा, तो उन पर तोपें दागी जाएंगी, और जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे. इसलिए वो धीमी गति से चलता रहा, उसी स्पीड से जो गार्डों को अपेक्षित थी.

रॉबर्ट ने चालक दल के एक साथी से पहिया संभालने को कहा. उसने अपना चेहरा ढंकने के लिए कप्तान की पुआल टोपी उतारी और पायलट हाउस की खिड़की पर खड़ा हो गया. अपनी ड्रेस जैकेट के नीचे रॉबर्ट का दिल जोर से धड़क उठा. कप्तान की नक़ल करते हुए, उसने अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया. फिर धीरे-धीरे रॉबर्ट ने इशारा किया.

वू, वू, वू..

पायलट हाउस से लेकर इंजन रूम तक होल्ड तक, सभी के शरीर तनावग्रस्त थे. गार्डों के "हाँ" के सिग्नल में बहुत अधिक समय लग रहा था. अंत में, "प्लांटर" को पास होने का संकेत मिला. रॉबर्ट ने अपने माथे से पसीना पोंछा. अभी कुछ ही मील और जाना था और उन्हें बस एक और किला पार करना था.
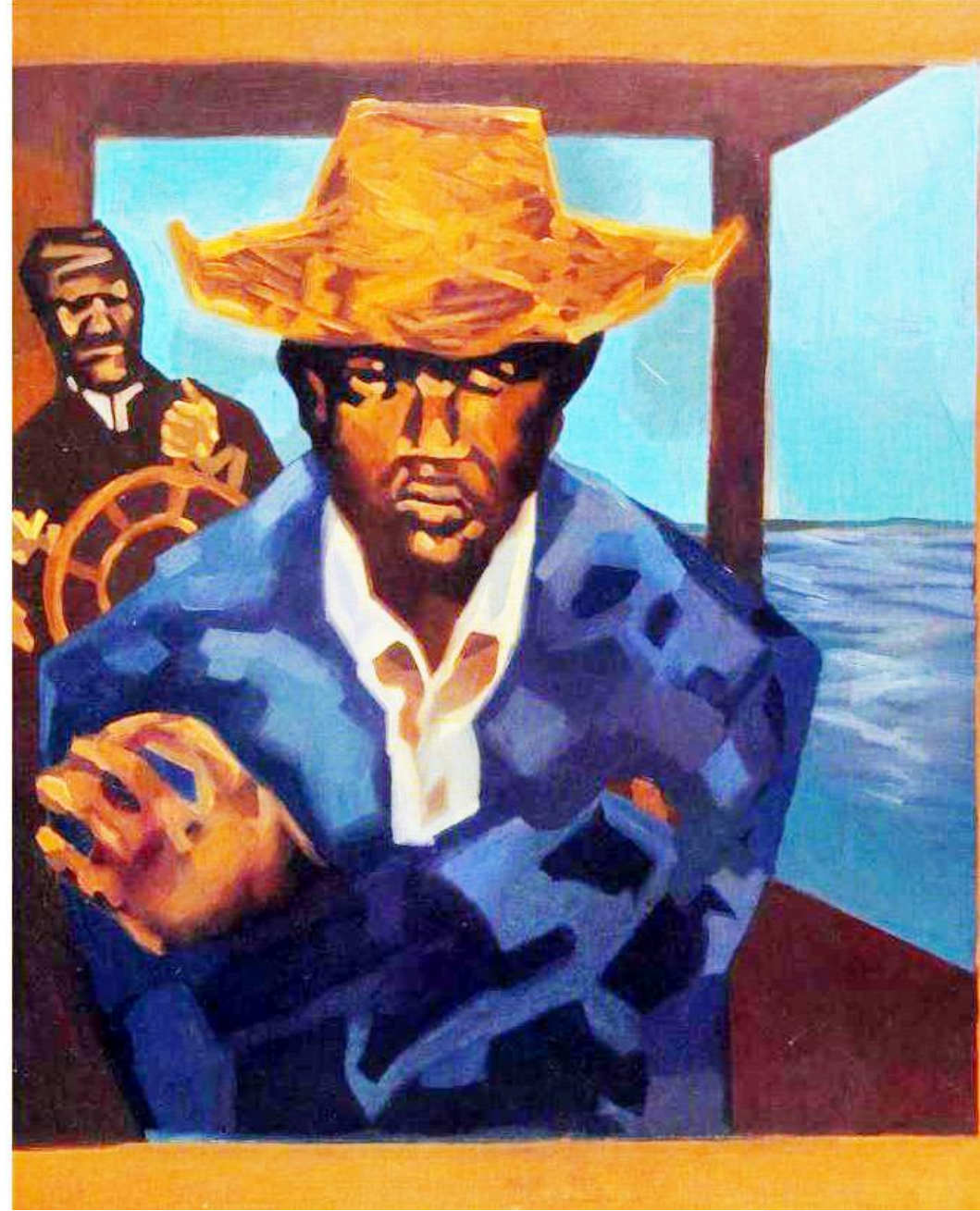
फोर्ट मोल्ट्री जल्दी ही आ गया, और "प्लांटर" बिना किसी परेशानी के गुजर गया. जब तक जहाज अंतिम कॉन्फेडरेट बंदूक की सीमा से बाहर नहीं हो जाता, तब तक रॉबर्ट ने जानबूझकर उसी गति को बनाए रखा. फिर उसने फुल स्टीम अहेड का ऑर्डर दिया! धुएं के ढेर से काले धुएं के बादल उठे. नाव आगे बढ़ी, उसके चप्पू के पहिए पानी को सफेद कर रहे थे.

एक कन्फेडरेट लुकआउट ने अपने क्षेत्र की दूरबीन के माध्यम से नाव की तेज़ गति से जाते देखा. जब जहाज समुद्र की ओर निकला, तो उन्हें पता चला कि कुछ ज़रूर गड़बड़ है. घबराहट में लुकआउट ने अलर्ट का संकेत दिया. रोशनी चमकी लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. कोई भी कन्फेडरेट बन्दूक अब "प्लांटर" तक नहीं पहुँच सकती थी.
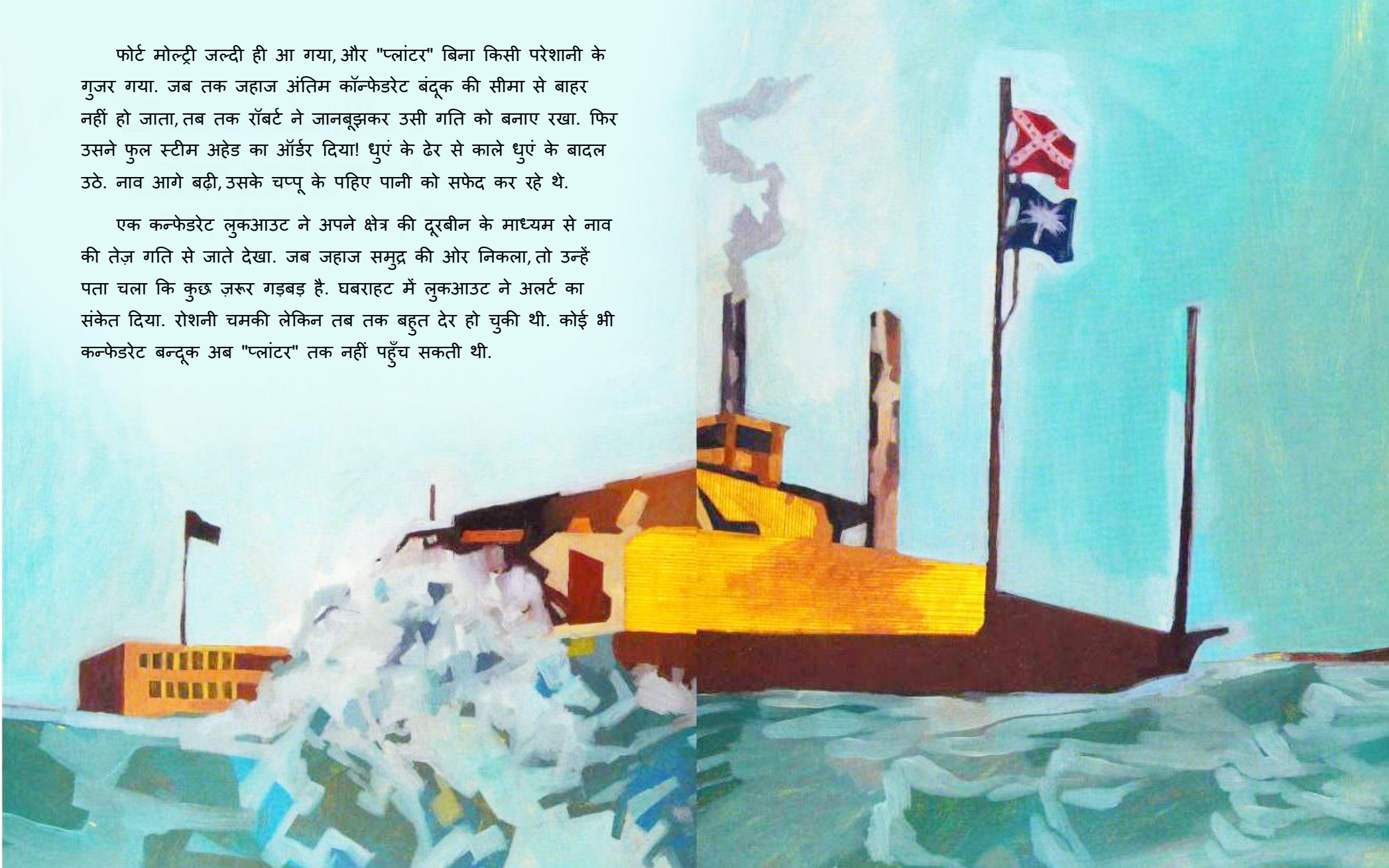
संघ के जहाज़ और स्वतंत्रता उनका आगे इंतजार कर रही थी, लेकिन "प्लांटर" अभी भी सुरक्षित नहीं था. शुरू से ही रॉबर्ट इन अंतिम क्षणों के बारे में सबसे ज्यादा चिंतित था. चार्ल्सटन से आने वाली किसी भी नाव पर संघ के नाविक आग लगाने को तैयार होंगे. रॉबर्ट को उन्हें गोली नहीं चलाने के लिए मनाना पड़ा. आत्मसमर्पण के संकेत के रूप में झंडे को नीचे करने और हन्ना की सबसे अच्छी सफेद चादर को उठाने का आदेश देते हुए, रॉबर्ट यूनियन फ्लीट के निकटतम जहाज "ऑनवर्ड" की ओर रवाना हुआ. सुबह के कोहरे में यूनियन लुकआउट को सफेद चादर नजर नहीं आई. उसने केवल एक बड़ी नाव को धुंध के बीच से गुजरते हुए देखा. उसने सोचा कि वो एक कॉन्फेडरेट जहाज था जो उन्हें घेरने आ रहा था.

चौकीदार ने अलार्म बजाया. "प्लांटर" पर बंदूकों की एक कतार ने निशाना साधा. पहिए पर जोर से झुककर, रॉबर्ट ने नाव को इधर-उधर घुमाया. सफेद चादर ने हवा पकड़ी और वो समुद्र की हवा में फड़फड़ाने लगी. अचानक एक केंद्रीय नाविक चिल्लाया कि उसने एक सफेद झंडा देखा.

"ऑनवर्ड" कप्तान ने बंदूकधारियों को अपनी बंदूकें रोकने का आदेश दिया और "प्लांटर" को पास आने का निर्देश दिया.

पुरुष, महिलाएं और बच्चे "प्लांटर" के डेक पर भागे. रॉबर्ट, सीधे और गर्व से खड़े होकर, आगे बढ़ा और उसने कप्तान की टोपी को हवा में ऊंचा उठाया. वो चिल्लाया कि वो संघ के लिए कन्फेडरेट तोपों का तोहफा लेकर आया था.

जब "ऑनवर्ड" का आश्चर्यचकित कप्तान सवार हो गया, तो रॉबर्ट ने उसे बताया कि उसे लगा कि "प्लांटर" अंकल ऐब लिंकन के लिए कुछ उपयोगी साबित हो सकता था. फिर रॉबर्ट ने कॉन्फेडरेट जहाज और उसके तोपों को यूनियन नेवी को सौंप दिया.

सफेद चादर को उतारा गया. जैसा ही "प्लांटर" के चालक दल और उनके परिवारों ने देखा, संघ का झंडा आसमान की ओर उठा. रॉबर्ट और हन्ना ने अपने बच्चों को गले लगाया. उनके दिल आशा से भरे हुए थे. नए दिन की इस सुबह में वे आजादी की राह पर थे.
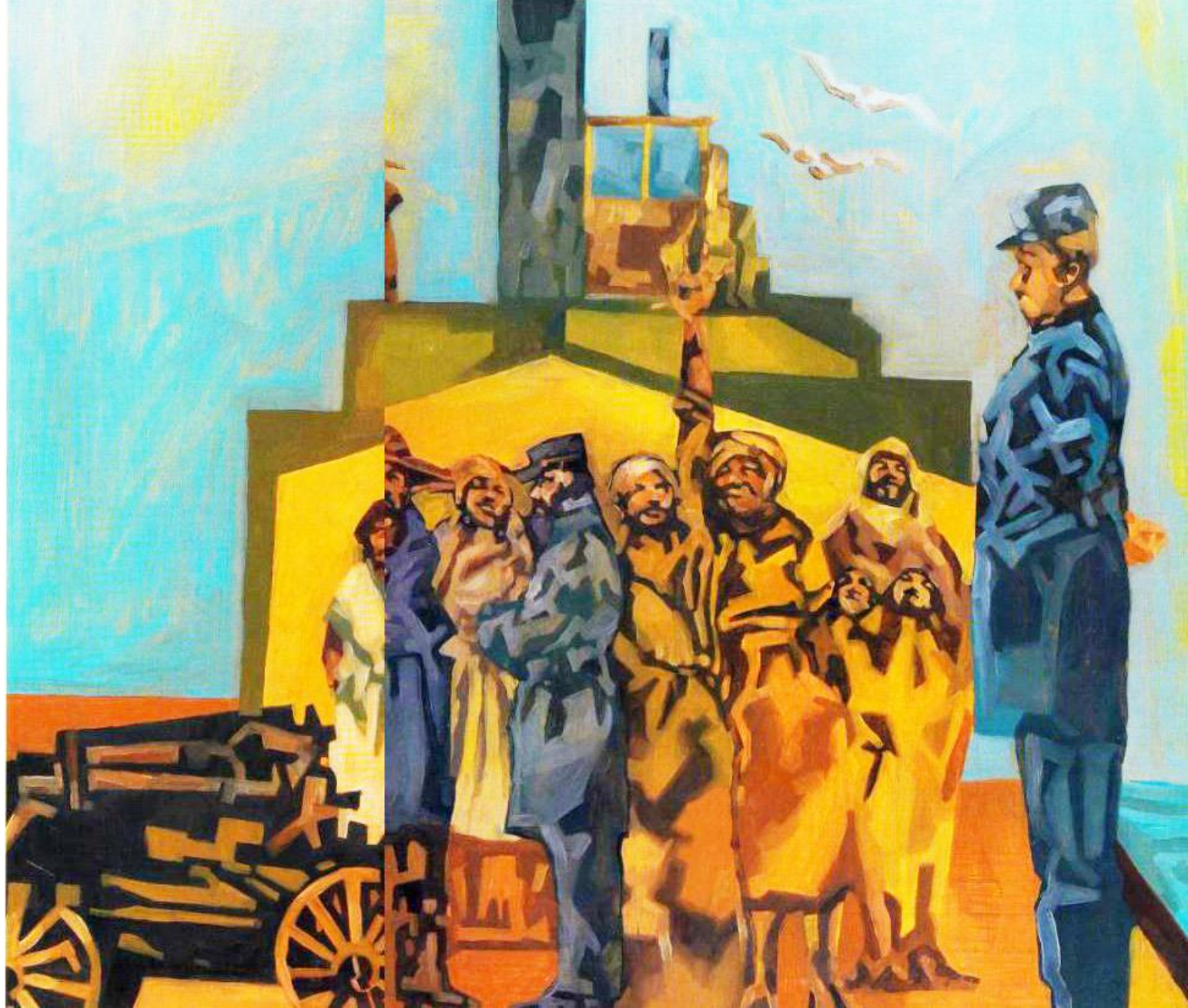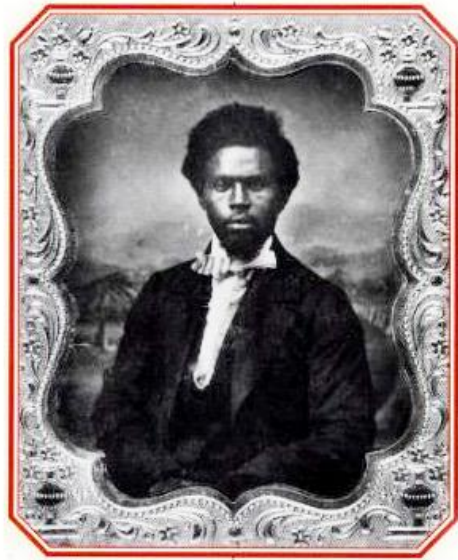
# अंत के शब्द

जबकि दक्षिण "प्लांटर" जहाज़ के नुकसान पर भड़क उठा, तब उत्तर ने रॉबर्ट स्मॉल की राष्ट्रीय हीरो के रूप में प्रशंसा की. न्यूयॉर्क हेराल्ड ने उसकी कार्रवाई को "युद्ध शुरू होने के बाद से सबसे वीर और साहसी कारनामों में से एक" घोषित किया. रॉबर्ट, संघ नौसेना के लिए एक नागरिक पायलट के रूप में कार्यरत था. उसने राष्ट्रपति लिंकन से मुलाकात की, और अफ्रीकी-अमेरिकियों को केंद्रीय सेना में शामिल होने देने के लिए उन्हें समझाया. रॉबर्ट ने पूर्व दासों के लिए सहायता प्राप्त करने के लिए उत्तर के लोगों से भी बात की.

1 दिसंबर, 1865 को, रॉबर्ट ने "प्लांटर" पर एक और जोखिम भरा साहसिक कार्य किया. जब वो दक्षिण कैरोलिना में तीव्र गोलियों की चपेट में आया उसे समय वो संघ के लिए जहाज चला रहा था. "प्लांटर" के कप्तान ने रॉबर्ट को नाव सौंपने का आदेश दिया, लेकिन रोबर्ट कोयले के बंकर में छिप गया. पूर्व दासों का चालक दल पकड़े जाने पर मारा जा सकता था, यह जानने के बाद, रॉबर्ट ने जल्दी से पहिए की कमान संभाली और उसने जहाज को कन्फेडरेट्स से आगे निकलने के लिए आगे बढ़ाया. उसकी बहादुरी के लिए - रॉबर्ट को "प्लांटर" के नए कप्तान के रूप में नामित किया गया था, जिससे वो संयुक्त राज्य के किसी पोत का पहला अफ्रीकी-अमेरिकी कप्तान बन गया.

पूरे युद्ध के दौरान रॉबर्ट ने सत्रह लड़ाइयों में भाग लेते हुए कई यूनियन जहाजों का संचालन किया. इन वर्षों के दौरान हन्ना ने दंपत्ति की दूसरी बेटी सारा को जन्म दिया. दुर्भाग्य से, उनके बेटे, रॉबर्ट जूनियर की चेचक से मृत्यु हो गई.

युद्ध के बाद रॉबर्ट और उनका परिवार ब्यूफोर्ट में ही रहा. उसने मैककी हाउस खरीदा, जहां वो कभी गुलाम था, और पढ़ना और लिखना भी सीखा. 1858 में, छिहत्तर अफ्रीकी-अमेरिकियों और अड़तालीस गोरों के साथ, रॉबर्ट ने एक नया लोकतांत्रिक संविधान लिखने में मदद की. दस्तावेज़ में दक्षिण कैरोलिना के सभी बच्चों के लिए पब्लिक स्कूलों की पहली मुफ्त व्यवस्था निर्माण की गई. रॉबर्ट ने राज्य विधायिका में एक सीट भी जीती, जहाँ उन्होंने अफ्रीकी-अमेरिकियों के समान अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, और राज्य मिलिशिया में सक्रिय हो गए, और प्रमुख जनरल के पद तक आगे बढ़े.

रॉबर्ट 1875 में यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस के लिए चुने गए. अपने पांच कार्यकालों के दौरान, उन्होंने सेना में नस्ल भेदभाव को खत्म करने का आह्वान किया, महिलाओं को वोट देने का अधिकार देने के लिए एक याचिका पेश की, और अफ्रीकी लोगों के लिए अलग रेल कारों की नीति के खिलाफ लड़ाई लड़ी.

जब रॉबर्ट का कांग्रेस का करियर समाप्त हुआ, तो उन्हें ब्यूफोर्ट में सीमा शुल्क कलेक्टर नियुक्त किया गया, और वो लगभग बीस वर्षों तक इस पद पर रहे. 1883 में हन्ना की मृत्यु हो गई. बाद में रॉबर्ट ने दोबारा शादी की और उनका एक और बेटा हुआ.

1895 में दक्षिण कैरोलिना ने अपने राज्य के संविधान को संशोधित किया, कानूनी रूप से अफ्रीकी-अमेरिकियों के मतदान के अधिकार को प्रतिबंधित कर दिया - एक अधिकार जो 1870 में संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में एक संशोधन द्वारा प्रदान किया गया था. 1895 के सम्मेलन में केवल छह अफ्रीकी अमेरिकी प्रतिनिधियों में से एक के रूप में, रॉबर्ट ने अपने लोगों के मतदान के अधिकार को संरक्षित करने के लिए स्पष्ट रूप से तर्क दिया. फिर भी, यह अधिकार उनसे छीन लिया गया था. रॉबर्ट और अन्य अफ्रीकी अमेरिकी प्रतिनिधियों ने इन परिवर्तनों को अपनाने के लिए दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया. अफ्रीकी-अमेरिकी अधिकारों के खिसकने के साथ, रॉबर्ट ने अनुचित कानूनों से लड़ना जारी रखा, भाषण दिए और समर्थन के लिए संयुक्त राज्य कांग्रेस के सदस्यों तक पहुंचे.

अपने बाद के वर्षों में रॉबर्ट अक्सर ब्यूफोर्ट में अफ्रीकी-अमेरिकी छात्रों के साथ देखे जाते थे. उन्होंने उन्हें अपने लोगों की उपलब्धियों के बारे में बताया और शिक्षा के महत्व पर जोर दिया. रॉबर्ट का 1915 में पचहत्तर वर्ष की आयु में निधन हो गया. उनका अंतिम संस्कार ब्यूफोर्ट में अब तक का सबसे बड़ा आयोजन था.

संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना ने 2004 में "मेजर जनरल रॉबर्ट स्मॉल" जहाज़ का नामकरण किया. यह नाम किसी अफ्रीकी-अमेरिकी के नाम पर रखा गया पहला सेना पोत है.